॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे परमदेव! तू कल्याण करने वाला है। तू हमारा ही नहीं सँसार का कल्याण करने वाला है। आज सँसार में प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या के हृदय में उस उज्ज्वलता को दें जो आपने सृष्टि के प्रारम्भ में प्रत्येक वेद मन्त्र द्वारा हमें प्रेरणा दी है। उस प्रेरणा को पुनः से जागृत कर। विधाता! आपने सृष्टि का निर्माण किया और सर्वप्रथम मानव के लिए ज्ञान का स्रोत दिया, उस आनन्द के स्रोत को आज भी दे। किसको दे? महान् पात्रों को दे। आज हमारे हृदय को पवित्र बना, जिससे हम सँसार में उज्ज्वल बनें विधाता! जब आपकी कृपा होगी तो हम आपकी दया के पात्र बनेंगे। हे भगवन्! तू दया कर और इतनी दया कर कि हमारी आत्मा के द्वारा कोई दोष न आए। विधाता! जब हमारी आत्मा के द्वारा नाना प्रकार के दोष आ जाएँगे, तो हमारा जीवन, जीवन न रहेगा। प्रभु! दया कर।

हे प्रभु! हम कैसे अभागे हैं, सँसार में। मैं तो भगवन्! वह कर्म करना चाहता हूँ जिस कर्म को करके प्रभु! मैं तुम्हारी गोद में आ जाऊँ। भगवन्! मैंने आज से पूर्व काल में जो पाप किया है उसे क्षमा करो। आज मैं क्षमा चाहता हूँ। प्रभु! तू आज मुझे अपना और अपनाकर अपनी गोद में ले।

हे भगवन्! तू यज्ञ को देने वाला है, प्रेरणा देने वाला है, भगवन्! वह प्रेरणा दो, जिससे हम अपना और इस सँसार का कल्याण कर सकें। जब विधाता की दया होती है तो हमारी आन्तरिक भावना उज्ज्वल और पवित्र हो जाती है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 525	कुल पृष्ठ संख्या	समग्र अंक : 600
वर्ष : 44	44	समग्र वर्ष : 50

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. सृष्टि-याग	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-17
4. ज्ञान और विज्ञान	पूज्यपाद-गुरुदेव एवम् महर्षि महानन्द मुनि	18-35
5. तीन समिधा	पूज्यपाद-गुरुदेव	37
6. ऋषियों के उद्‌गार		37
7. दान, पुस्तकों की सूची व प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		38-42

सूचना

सभी आजीवन/वार्षिक सदस्यो को 'यौगिक प्रवचन' पत्रिका प्रत्येक मास की 10/11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी भी सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में अपने पोस्ट मैन से एक सप्ताह के समय में जानकारी करें और फिर भी न मिलने की स्थिति में अपने सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस में इस विषय में लिखित एक प्रार्थना-पत्र पोस्ट मास्टर साहब को दें जिससे कि पत्रिका न मिलने की खोज-बीन डाक विभाग द्वारा कराके आपकी पत्रिका आपको समय पर मिलनी प्रारम्भ हो जाए। कृपया प्रार्थना-पत्र की एक प्रति पर डाक विभाग द्वारा प्राप्ति के हस्ताक्षर व मोहर लगवाकर हमें भी भेज देवें जिससे कि इस विषय में यहाँ भी डाक विभाग को अवगत करा दिया जाए।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

सृष्टि-याग

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव जो इस सँसार का नियन्ता है अथवा निर्माण करने वाला है उस मेरे प्यारे प्रभु का एक-एक वेदमन्त्र उसकी गाथा गा रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है अथवा उसका वर्णन कर रहा है क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र के ऊपर चिन्तन करने से हमें प्रतीत होता है जैसे एक-एक वेदमन्त्र में सर्वत्र ब्रह्माण्ड का ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है। ऐसा हमारे आचार्यों ने माना है कि जब हम एक परमाणु का विभाजन करते हैं तो सर्वत्र सृष्टि का चित्रण उसमें दृष्टिपात होता है। एक ही परमाणु के विभाजन करने से सर्वत्र सृष्टि की रचना दृष्टिपात आने लगती है। जिस प्रकार माता के गर्भस्थल में मानव का निर्माण होता है तो माता के गर्भस्थल में निर्माण करने मात्र दृष्टि से ही एक-एक आभा में रमण करने वाला इस ब्रह्माण्ड का सर्वत्र विज्ञान है।

वैदिक सहित्य

आओ मेरे पुत्रो! मैं तुम्हें विज्ञान में ले जाना नहीं चाहूँगा। विचार-विनिमय क्या, आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है? इससे पूर्व शब्दों में मेरे प्यारे महानन्द जी ने बहुत से विचार दिए। उन्होंने राष्ट्रीय विचार दिए परन्तु अश्वमेध याग का भी वर्णन आ रहा था।

बेटा! वह काल हमें स्मरण आने लगता है जब वृष्टि, वाजपेयी और अग्निष्टोम यागों का वर्णन हमारे वैदिक साहित्य में आता रहा है। परम्परागतों से ही जब गौ-मेध याग का वर्णन आता है तो आचार्य के ऊपर उसका अभीष्ट आता है और यह कहा जाता है कि हे आचार्य! गौ-मेध याग क्या है? परन्तु जब पुत्रेष्टि याग का वर्णन आता है तो माता को कहा जाता है, हे माता! तू पुत्र याग करना चाहती है परन्तु पुत्रेष्टि याग क्या है? भिन्न-भिन्न प्रकार के वैदिक साहित्य में वर्णन आते रहते हैं। आज मैं विशेष चर्चा तो प्रकट नहीं करुँगा, केवल विचार यह देने के लिए आया हूँ कि हमारे यहाँ परम्परागतों से ही वैदिक साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार प्रायः आते रहते हैं।

भगवान् श्री राम

मेरे प्यारे! देखो भगवान् राम जब विद्यालय में अध्ययन कर रहे थे तो वह प्रातःकालीन याग करते थे। याग करने के पश्चात् विज्ञान की तरँगों को जानने लगते थे। क्योंकि महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज महान् वैज्ञानिक और ब्रह्मवेत्ता थे। ब्रह्मवेत्ता वही होता है जो आध्यात्मिक विज्ञान के मार्ग से हो करके ब्रह्म में प्रवेश करता है, ब्रह्म में प्रतिष्ठित हो जाता है। वह ब्रह्मवेत्ता कहलाया जाता है। **हमारे यहाँ ब्रह्मवेत्ता भी दो प्रकार के होते हैं।** एक ब्रह्मवेत्ता वह जो जनता में ब्रह्म को, जर्नादन को स्वीकार कर रहा है, एक वह ब्रह्मवेत्ता जो एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके समाधिस्थ हो रहा है अथवा वह प्राण और मन को एक सूत्र में लाने का प्रयास करता है। बेटा! मैं यौगिक क्षेत्रों में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार क्या चल रहा है? कि हमारे यहाँ, भगवान् राम के यहाँ प्रातःकाल याग हो रहा है। याग में उपदेश मंजरियाँ चल रही हैं। उपदेश चल रहे हैं। मानव के जन-जीवन की आभा कि हमारा जीवन कैसे ऊर्ध्वा बने यह विचारधारा भी याग में परणित होती रहती थी। आओ मेरे प्यारे! मैं भारद्वाज मुनि के द्वार

पर ले जाने के लिए जब तुम्हें बात करता हूँ तो विचार आता है कि भगवान् राम भारद्वाज मुनि के यहाँ विज्ञान की शिक्षा पा रहे हैं। विचार क्या कि मैं आज इस क्षेत्र में ले जाना नहीं चाहता हूँ।

यजमान का रथ

आज मैं तुम्हें एक ऋषि के द्वार पर ले जाना चाहता हूँ क्योंकि हमारे यहाँ वेद का ऋषि यह कह रहा है, वेद का मन्त्र कहता है कि यजमान यज्ञशाला में विद्यमान है और यजमान का रथ बन करके द्यौ-लोक को जा रहा है। स्वाहा कह रहा है। देव अग्नि, विद्युत् की धाराएँ उन शब्दों को, उस मानव के रथ को बनाकर, यजमान को द्यौ-लोक में पहुँचा रहा है। वह द्यौ-लोक में प्रवेश कर रहा है। द्यौ कहते हैं अस्वतम् या प्रकाश को, तरँगों को। विचार आता रहता है कि जब हम इस प्रकार के रथी बनते हैं तो मुनिवरो! वह रथ क्या है? मुझे स्मरण आता रहता है भारद्वाज और उद्दालक गोत्र के नाना ऋषि हुए हैं जिन्होंने अपनी अनुसन्धानशाला में विद्यमान होकर यज्ञशाला और अनुसन्धानशाला दोनों का समन्वय किया है। दोनों का समन्वय करते हुए अपने जो महापुरुष थे उनके चित्रों को अन्तरिक्ष में उन्होंने यन्त्रों के द्वारा दृष्टिपात किया है। आज मैं तुम्हें विज्ञान के युग में ले जाना नहीं चाहता हूँ?

याग के होता

आज हमें याज्ञवल्क्य मुनि महाराज और शिष्यों के सम्बन्ध में कुछ प्रसंग स्मरण आ रहे हैं। वेद का मन्त्र कह रहा था कि यजमान याग करना चाहता है, उस याग में कितने होता होने चाहिएँ। यहाँ होताओं का प्रसंग आ रहा है बेटा! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज विद्यालय में विद्यमान हैं और विद्यालय में जब प्रसंग आया तो ब्रह्मचारियों ने एक प्रश्न किया। उन्होंने एक अलंकारिक रूपक बनाया और कैसा बनाया कि एक यजमान बन गया, एक प्रश्नकर्ता बन गया। तो प्रश्न

करने वाला कहता है कि हे ऋषिवर! हे पूज्यपाद गुरुदेव! एक यजमान आपकी सभा में विद्यमान है, वह याग करना चाहता है। उस याग में यज्ञशाला में कितने होता होने चाहिए? तो याज्ञवल्क्य मुनि कहते हैं कि इस यज्ञशाला में चौबीस-होता होने चाहिएँ। चौबीस-होताओं का वर्णन किया। उसके पश्चात् शिष्य कहता है कि महाराज! यजमान यज्ञ करना चाहता है उसमें कितने होता होने चाहिए? तो ऋषि याज्ञवल्क्य कहते है कि इसमें सत्रह-होता होने चाहिए। शिष्य ने पुनः प्रश्न कर दिया कि महाराज! यह यजमान आपकी सभा में विद्यमान है यह कितने होताओं से यज्ञ करने वाला बने? तो ऋषि कहता है, हे ब्रह्मचारियों! ग्यारह-होता होने चाहिएँ। उन्होंने कहा कि महाराज! यजमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिएँ? ऋषि कहता है नौ-होता चाहिएँ। उन्होंने पुनः प्रश्न किया कि हे ऋषिवर! यजमान आपकी सभा में विद्यमान हैं वह कितने होताओं से याग करने वाला बने? उन्होंने कहा, आठ होने चाहिएँ। पुनः प्रश्न किया कि कितने होता होने चाहिए? उन्होंने कि पाँच होने चाहिए। फिर ब्रह्मचारियों ने कहा कि महाराज! यजमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिएँ। उन्होंने कहा तीन होने चाहिएँ। पुनः प्रश्न किया, यजमान याग करना चाहता है कितने होता हों? उन्होंने कहा, दो होने चाहिएँ। जब पुनः प्रश्न किया, यजमान याग करना चाहता है, कितने होता हों? उन्होंने कहा, एकाकी होना चाहिए। एक पर आ करके ब्रह्मचारी मौन हो गए।

चौबीस-होता

पुनः ब्रह्मचारियों ने प्रश्न किया जो महाराज! यज्ञशाला में वह चौबीस-होता कौन से हैं जो आपने सबसे प्रथम वर्णन किया। याज्ञवल्क्य मुनि कहते हैं कि हे ब्रह्मचारियों! सृष्टि के पिता ने सृष्टि के आदि में इस मानव शरीर रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया। इस ब्रह्माण्ड रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया और दोनों का समन्वय कर दिया। बेटा! ऋषि क्या कहता है? ऋषि कितनी ऊर्ध्वामयी चर्चा कर

रहा है? हे ब्रह्मचारियों! चौबीस-होता इस मानव के शरीर में हैं जिनसे याग हो रहा है। दस प्राण हैं–अपान, उदान, समान और व्यान, नाग, देवदत्त, धनञ्जय, कूर्म और कृकल यह दस प्राण कहलाते हैं, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ है, पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं और मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार यह चौबीस स्थलों वाला मानव शरीर कहलाता है और चौबीस खम्भे इस ब्रह्माण्ड में जो हमें दृष्टिपात आ रहे हैं नाना लोक-लोकान्तरों वाला यह जो ब्रह्माण्ड है अथवा जगत् है यह नाना आकाश गंगाओं वाला है यह भी बेटा! चौबीस खम्भों का एक जगत् कहलाता है।

ऋषि कहता है, याज्ञवल्क्य मुनि कहते हैं कि मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार यह **चतुष्करण** कहलाता है। ज्ञानेन्द्रियाँ पञ्चीकरण कहलाता है, उप-इन्द्रियाँ दस इन्द्रियाँ कहलाती हैं। प्राण सँसार में जितनी भी विभक्त क्रिया हो रही है वह सब प्राणों की प्रतिभा कहलाती है। वह जो ब्रह्माण्ड में आभा हो रही है वह इन प्राणों की कहलाई जाती है। विचार-विनिमय क्या? यह मानव का शरीर चौबीस स्तम्भों वाला है। माता चाक्राणी से एक समय श्वेता ऋषि ने कहा कि हे चाक्राणी! तुम्हारे इस मानव शरीर में कितने स्तम्भ हैं? तो चाक्राणी ने कहा, चौबीस खम्भे कहलाते हैं। उन्होंने इसका उत्तर भली-भाँति दिया।

सत्रह-होता

बेटा! अब मैं आगे जाना चाहता हूँ। ब्रह्मचारी कहते हैं महाराज! यह तो हमने जान लिया परन्तु सत्रह क्यों? उन्होंने कहा, हे ब्रह्मचारियों! जिस समय इस मानव शरीर को यह आत्मा त्यागता है उस समय उदान प्राण के साथ में मनस्तत्त्व आता है और यह चित्त के मण्डल को ले करके आता है। चित्त के मण्डल को ले करके वह आत्मा के साथ में उदान प्राण के साथ यह मानव शरीर को त्याग देता है। उस समय मानव का शरीर सत्रह तत्त्वों का सूक्ष्म शरीर कहलाता है। सूक्ष्म शरीर में सत्रह तत्त्व कहलाते हैं। पञ्चमहाभूत हैं, दस प्राण

हैं और मन और बुद्धि कहलाती है। यह सूक्ष्म शरीर वाला जो शरीर कहलाता है, जो स्थूल को त्यागता है उसके मण्डल में बेटा! पँचीकरण होता है। उसी में विभक्त करने वाला प्राण होता है। वह उदान प्राण के साथ में गति करता रहता है।

ग्यारह-होता

इसके पश्चात् ब्रह्मचारियों ने कहा प्रभु! यह भी हमने जान लिया परन्तु ग्यारह क्यों होता होने चाहिएँ? उन्होंने कहा, दस इन्द्रियाँ और ग्यारहवाँ मन कहलाता है, क्योंकि वह इस मानव शरीर रूपी जो रथ है इसकी इन्द्रियाँ एक अश्व के रूप में विद्यमान हैं और मन इनका सारथी बना हुआ है। जब यह मन सारथी बन करके गति करने लगता है तो यह रथ गति करता हुआ वह एकोकी कहलाता है। विचार क्या कि हमारे बुद्धिमानों ने विचार किया, बुद्धिमानों ने अनुसन्धान किया।

एकादशी-व्रत

हमारे यहाँ **एकादशी का व्रत** कहलाया जाता है एकादशी के व्रतों में दस इन्द्रियाँ और ग्यारहवाँ मन–यह ग्यारह कहलाते हैं तो एकादशी के ऊपर बहुत सी विवेचनाएँ आती रहती हैं। परन्तु यहाँ एकादशी व्रत के ऊपर बहुत सी विवेचनाएँ हैं। विचार क्या है? कि **हमारे यहाँ व्रत कहते हैं संकल्प को।** मानव संकल्प करता है। प्रत्येक इन्द्रिय के साथ में एक-एक संकल्प लगा हुआ है। जैसे मुनिवरों! मानव संकल्प करता है मैं अपने नेत्रों से कुदृष्टिपात नहीं करूँगा। देवताओं का होता बना हुआ है। नेत्रों से क्या, श्रोत्रों से भी कोई शब्द अशुद्ध नहीं ग्रहण करूँगा, वाणी से अशुद्ध नहीं उच्चारण करूँगा। इस प्रकार मानव अपने एकोकी धर्म को विचारता है और उनके ऊपर संयम करने वाला सारथी बन करके शरीर रूपी रथ को अग्रणीय बनाता है वही मेरे प्यारे! एकादशी व्रत कहलाता है। एकादश ग्यारह इन्द्रियाँ कहलाती हैं। दस

इन्द्रियाँ हैं, ग्यारहवाँ मन कहलाता है। इस रथ को ले जाने वाला है और इन्द्रियों का वह शासक बना हुआ है। **इन्द्रियों को वश में करने का नाम हमारे यहाँ एकादशी व्रत कहा गया है।**

मेरे प्यारे महानन्द जी ने एक समय मुझे प्रकट कराया कि एकादश व्रत का नाम ''अन्नादाम् त्यागम् ब्रह्मणोकृति'' मैंने अपने पुत्र से कहा, नहीं पुत्र! अन्न को त्यागने का नाम व्रत नहीं माना गया है। व्रत कहते हैं सङ्कल्प को, व्रत कहते हैं इन्द्रियों को संयम करना चाहिए। परन्तु अन्न को भी त्यागना चाहिए। मैं यह नहीं कहता हूँ कि अन्न त्यागने की वस्तु नहीं होती। वेद के आचार्यों ने अन्न के सम्बन्ध में यह कहा है कि हमारे यहाँ सात प्रकार के अन्नों की उत्पत्ति सृष्टि के प्रारम्भ में हुई। हमें उस अन्न को त्यागना है जिससे हमारे जीवन में अशुद्ध संस्कारों का जन्म होता है। उनको हम त्यागने वाले बनें। अन्न को त्यागने का नाम व्रत नहीं कहलाता क्योंकि अन्न को हमारे ऋषि-मुनियों ने कहा है कि अन्न को इतना पान करना चाहिए जैसे उनका प्रकरण होना चाहिए। जो योगी बनना चाहता है उसे अल्पाहारी बनना चाहिए। सूक्ष्म आहार करना चाहिए, अन्नाद त्यागने की वस्तु नहीं होती। परन्तु उसको सूक्ष्म-सूक्ष्म पान करते हुए तुम अपने प्राणों की रक्षा, अन्नाद पर तुम आ जाओगे तो वही तुम्हारे जीवन का एक कृति भोज बन जाएगा।

परिणाम क्या? अन्न की हमारे यहाँ आचार्यों ने बहुत ऊँची कल्पना की है। हमारे यहाँ वह भी अन्नाद है जिससे हमारा आत्मा तृप्त होता है। हम नेत्रों के द्वारा रूप के अन्न को ग्रहण करते हैं। शब्दों के द्वारा श्रोत्रों से ग्रहण करते हैं और वाणी के द्वारा अपने में आभायित करते रहते हैं। हमारी यह स्पर्श क्रियाएँ त्वचा के द्वारा ग्रहण की जाती है। ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा यह सब आभाएँ–हृदय महान् बन जाता है। इसीलिए **प्रत्येक मानव को हृदय को पवित्र बनाना है।**

नौ-होता

ब्रह्मचारियों ने कहा, हे आचार्य! हे पितृ! हमने ग्यारह को तो जान लिया परन्तु हम जानना चाहते हैं कि नौ क्यों? इस मानव शरीर, इस अयोध्यापुरी में बेटा! नौ द्वार माने गए हैं। दो नासिका के छिद्र हैं, दो चक्षु हैं, दो श्रोत्र हैं, एक मुख एक गुदा द्वार और एक उपस्थ। यह नौ द्वार कहलाए जाते हैं। इन नौ द्वारों पर नौ देवता विद्यमान हैं। कहीं-कहीं दो-दो देवता विद्यमान हैं वह अपना कार्य कर रहे हैं। प्रत्येक द्वार पर द्वारपाल बने हुए हैं। हमें इन नौ जो द्वार हमारे मानव शरीर में हैं इन नौ द्वारों के ऊपर हमें अनुसन्धान करना चाहिए। जैसे बेटा! हमारे प्राणों की गति चलती है छिद्रों से, सूर्य स्वर कहलाता है, चन्द्र स्वर कहलाता है इन स्वरों को जानना है। चन्द्र स्वर के जानने से रसों का ज्ञान हो जाता हैं सूर्य स्वर के जानने से यह जो तेजोमयी जगत् है इसका सर्वत्र ज्ञान हो जाता है। मुझे स्मरण आता रहता है सूर्य स्वर के जानने वाले महाराजा हनुमान थे। सूर्य की जो नाना किरणें हैं इन किरणों के ऊपर अनुसन्धान करते हुए वह वैज्ञानिकता को प्राप्त होते जा रहे हैं। मुझे स्मरण आता रहता है सूर्य विज्ञान को जानने वाला, सूर्य विज्ञान के ऊपर प्राणायाम करने वाला वह सूर्य की किरण के साथ में, सूर्य लोक में पहुँच जाता है। आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विवेचना देने नहीं आया हूँ। चन्द्रमा के चन्द्र स्वरों को जानने वाला चन्द्रमा की सर्वत्र कलाओं को जानने लगता है। चन्द्रमा की जो नाना प्रकार की कलाएँ है वह उसकी कान्ति में छिटकती रहती हैं। आभा में परणित होती रहती हैं। बेटा! वह जो चन्द्रमा है वह रसों का भण्डार है। जो नाना प्रकार के रस आते रहते हैं।

मुझे स्मरण है भगवान् राम इन चन्द्र स्वरों को जानते थे। चन्द्र कलाओं को जानते थे। मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन किया कि वह पृथ्वी के विज्ञान को, पृथ्वी की आभा को जानते रहते थे। कितना खनिज, कितनी दूरी पर विद्यमान है? कितना रस बह रहा है? इस रस

की कितनी गति है? यह सब चन्द्रमा की कला को जानने से प्राप्त होता है।

मैं आज यह वाक्य प्रकट करा रहा हूँ कि यह दोंनो प्रकार के स्वरूप को जानने से सृष्टि का अर्द्ध विज्ञान उस मानव के मस्तिष्क में ओत-प्रोत हो जाता है। इसी प्रकार हमारे यहाँ द्वारपाल बने हुए हैं। हमारे श्रोत्रों का सम्बन्ध शब्दों से है। शब्द जो हमारा जाता है उसके साथ चित्र जाता हुआ अन्तरिक्ष में रमण करता है। यहाँ तक मानव जानने लगता है श्रोत्र विज्ञान वाला अर्द्ध विज्ञान वाला कि **यह जो मानव शब्दों को उच्चारण कर रहा है यह एक क्षण समय में यह एक सौ सत्रह बार पृथ्वी की परिक्रमा कर जाता है।** परिणाम क्या? यह अद्भुत विज्ञान है, इसको जानने वाला, स्वरों को जानने वाला क्योंकि इनका अणु से सम्बन्ध है और यह जो विद्युत् की धाराएँ हैं यह उत्तरायण से दक्षिणायण को गति करने वाली विद्युत् की धाराएँ हैं। हम उस विद्युत् की धाराओं को जान करके हम श्रोत्र विज्ञान में इतने पारायण बन सकते हैं क्योंकि हमारे यहाँ ऋषि-मुनि इन्हीं के द्वारा सर्वत्र विज्ञान का प्रायः अनुभव करते रहे हैं।

मुझे स्मरण आता रहता है माता मदालसा सतोयुग के काल में हुईं। माता मदालसा श्रोत्रिय विज्ञान को जानती थीं। प्राणायम विज्ञान को जानती थी। माता अपने गर्भस्थल में यह अनुभव कर लेती थीं कि कैसी बुद्धि वाला पुत्र मेरे गर्भ से जन्म लेगा? माता मदालसा ब्रह्मवेत्ता बना रही है इस विज्ञान के द्वारा। हमारे यहाँ विज्ञान होना चाहिए। हमारी माताएँ, मेरी पुत्रियाँ जो विज्ञान में रमण करती हैं वह माता अपने बालक की आभा को जानती है। इसके विचारों में, उसकी आभा परणित हो जाती है।

बेटा! मैं दूरी चला गया हूँ। मैं भयङ्कर वन में नही जाना चाहता हूँ। यह जो ज्ञान-विज्ञान है यह विशाल बन है। इसमें जाने से मार्ग

प्राप्त नहीं होता। परिणाम क्या? यह जो नौ द्वार हैं हमारे मानव शरीर में, इसमें प्रत्येक द्वार पर एक द्वारपाल विद्यमान है। वह देवता कहलाता है। उस देवता के जानने से सृष्टि का सर्वत्र ज्ञान और विज्ञान मानव के मस्तिष्क में ओत-प्रोत हो जाता है। मेरे पुत्रो! जहाँ श्रोत्रों का ज्ञान और विज्ञान है, जहाँ कश्यप और गौतम की चर्चाएँ आती रहती है। हमारे यहाँ सप्तर्षि जो मण्डल है बेटा! सप्तर्षियों का वर्णन आता है। प्रत्येक ऋषि, प्रत्येक देवता का ज्ञाता था इसीलिए उनका नाम गौतम, कश्यप, भारद्वाज, विश्वामित्र, जमदाग्नि इत्यादि कहलाते थे। बेटा! वह सप्तर्षि मण्डल कहलाता था। उन ऋषियों का मण्डलों से समन्वय रहता था। आज मैं उस विज्ञान में जाना नहीं चाहता हूँ। विचार-विनिमय क्या? विचार बेटा! मैं यह दे रहा था कि हमें नौ द्वारों के ऊपर संयम करते हुए याग करना है। यह सँसार रूपी याग है। हमें इसके ऊपर अनुसन्धान करना है।

आठ-होता

परन्तु ब्रह्मचारियों ने कहा प्रभु! आठ होता क्यों होने चाहिए? उन्होंने कहा कि आठ वसु कहलाते हैं जिनमें प्राणी रहते हैं अथवा रमण करते हैं वह आठ वसु हैं, वह आठ वसु कहलाते हैं। एक-एक आकाश गंगा है। एक-एक आकाश-गंगा में करोड़ों-करोड़ों स्वाति नक्षत्र कहलाते हैं। करोड़ो-करोड़ो सूर्य मण्डल कहलाते हैं यह आठ वसु कहलाते हैं आठ की आभा में रमण किया गया है। आठ इसलिए क्योंकि आठ वसु हैं जो पार्थिव तत्त्व वाले लोक हैं, वह आठ वसु कहलाते हैं जिसमें प्राणी रहते हैं। जैसे मंगल है, बुद्ध है, स्वाकीति है, शनि है। इसमें सबमें पार्थिव प्राणी रहते हैं और अग्नेय प्राणी शृङ्गी मण्डल में रहते हैं और जल आभायित प्राणी चन्द्र-मण्डल में रहते हैं। आज मैं बेटा! इनके ऊपर तुम्हें विचार देने लगूँ तो वर्षों समाप्त हो जाएँ। आज मैं इस सम्बन्ध में तुम्हें इतनी चर्चा करने आया हूँ कि यह आठ वसु हैं जहाँ बसने वाले प्राणी रहते हैं।

ब्रह्मचारी कवन्धि और भारद्वाज मुनि महाराज का जब दोनों का सम्वाद हुआ ब्रह्मचारी कवन्धि को भारद्वाज मुनि ने यह निर्णय कराया है कि जितने भी लोक-लोकान्तर है, आकाश गँगाऐं हैं, मेरी विज्ञानशाला में यह जो यन्त्र विद्यमान हैं एक यन्त्र के द्वारा तीन सौ बहत्तर आकाश-गंगाऐ मुझे दृष्टिपात आती हैं और इन आकाश गंगाओं का जितना विस्तार है यह वर्णन करते हुए भारद्वाज मुनि ने कहा है मेरी जो आकाश गंगा है एक समय जब ब्रह्मचारिणी शबरी और ब्रह्मचारी सुकेता एक ही आकाश गँगा के सूर्यों की गणना करने लगे तो उनको अरबों-खरबों एक ही आकाश गंगा में सूर्य दृष्टिपात आने लगे। एक ही आकाश-गंगा में जब अरबों खरबों सूर्य की गणना कर ली तो उन्होंने कहा एक आकाश-गंगा में जहाँ इतने सूर्य हैं ऐसी तीन सौ बहत्तर आकाश गंगाऐ मेरी विज्ञानशाला में दृष्टिपात आती हैं। विचार आया कि इसमें आठ वसु हैं और आठों से आकाश गंगा को विभक्त कर दिया है। विचार-विनिमय क्या? मुनिवरों! यह आकाश-गंगाएँ कहलाती हैं। आकाश-गंगा में वर्णन नहीं किया जा सकता कितने अणु चन्द्रमा कहलाते हैं। आज मैं बेटा! इस विज्ञान के वन में नहीं जाना चाहता हूँ।

पाँच-होता

ब्रह्मचारियों ने कहा पाँच-होताओं से याग क्यों? उन्होंने कहा पञ्च-महाभूत हैं। जल, पृथ्वी, अग्नि है वायु है और अन्तरिक्ष ब्रह्मणेः। यही पञ्च-महाभूत कहलाते हैं। यह मानव के शरीर में गति कर रहे हैं, यज्ञशाला में विद्यमान हैं। इन्हीं से यजमान याग करता है। पञ्च-महाभूतों को जानता हुआ वह प्रायः पञ्चीकरण करता रहता है। पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, पञ्च प्राण हैं–विचार-विनिमय यह कि इनको जानने वाला पञ्चीकरण में होता हुआ सँसार के परमाणुवाद को, अणुवाद को जानता हुआ वह भौतिक विज्ञानवेत्ता बनता हुआ आध्यात्मिकवाद में प्रवेश कर जाता है।

तीन-होता

उन्होंने कहा कि महाराज! तीन-होता क्यों? उन्होंने कहा कि मानव शरीर तीन गुणों वाला है, जिसे सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण कहते हैं।

दो-होता

उन्होंने कहा महाराज दो क्यों? उन्होंने कहा एक जड़वत् है और एक चेतना है। चेतना में ब्रह्म है और जड़वत में प्रकृति कहलाती है।

एक-होता

उन्होंने कहा कि एक क्यों? एक चेतना है। एक ही सूत्र है उस सूत्र में सर्वत्र ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है। कैसे पिरो रहा है बेटा! कैसा अनुपम सूत्र है? ब्रह्माण्ड का एक-एक कण उस सूत्र में पिरोया हुआ है। जैसे माला में सूत्र होता है इसी प्रकार उसी सूत्र में यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है।

यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे

आओ मेरे प्यारे! मैं कहाँ चला गया? विचार यह प्रारम्भ हो रहा था, मैं एक-एक मनके के ऊपर जब विवेचना करुँगा बेटा! तब तुम्हें प्रतीत होगा चौबीस से ले करके एकोकीकण तक मानव को चिन्तन करना चाहिए अथवा विचार-विनिमय करना चाहिए, जिससे मानव ज्ञान और विज्ञान में रमण करता हुआ सँसार-सागर से पार हो जाए। यह है बेटा! आजका वाक्य। यह क्या कह रहा है? ब्रह्मचारी कहते हैं ऋषि से, हे ऋषि! आप को धन्य है। आपने हमें सर्वत्र ब्रह्माण्ड की जो गुत्थियाँ हैं, ब्रह्माण्ड की जितनी भी तरँगे है उन में आपने हमें रमण कराया है। इस मानव शरीर को ब्रह्माण्ड से समन्वय किया है। ऋषियों ने ब्रह्माण्ड को और मानव के पिण्ड को दोनों का समन्वय करते हुए एक सूत्र में पिरों दिया है। कैसा सूत्र है बेटा! वह कैसी चेतना वाला

सूत्र है? जो एक सूत्र में यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है। कैसे पिरोया जा रहा है? अणु, परमाणु, त्रिसरेणु कैसे पिरोये जा रहे हैं? यह कैसे गति कर रहे हैं? उसी माला के मनके हैं। दोनों एक ही माला के मनके उस सँसार को आभायित करा रहे हैं।

आओं मेरे प्यारे! ब्रह्मचारियों ने आचार्य के चरणों को स्पर्श किया और स्पर्श करके कहा धन्य है प्रभु! आपने हमें ऊर्ध्वागति में पहुँचाया है। आप तो धन्य हैं। यह है बेटा! आजका वाक्य।

आजका वाक्य क्या कह रहा है? मुनिवरों! मानव का जो जीवन है इसका समन्वय इस ब्रह्माण्ड से है। इसलिए प्रत्येक मानव, प्रत्येक देवकन्या को, ऋषि-मण्डल को यह विचारना चाहिए कि हम सब एक सूत्र के मनके हैं और सूत्र को जानना है और अपने को उस सूत्र में पिरो देना है। यह है बेटा! आजका वाक्य। अब मुझे समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएँ कल प्रकट करुँगा। आजका वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

वेदपाठ. . . . . .

अच्छा भगवन्! आज्ञा

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दिनाँक : 1 अक्टूबर, 1981

समय : रात्रि 8 बजे

स्थान : ग्राम नागौला, मेरठ

॥ ओ३म् ॥

ज्ञान और विज्ञान

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जो मानव सँसार का मनोनीत एक ही देवता है, वह जो देव है, जिसकी आभा में प्रत्येक प्राणीमात्र बेटा! कटिबद्ध हो रहा है। कोई भोग भोगने आया है, कोई उसका उपभोग भोग रहा है। परन्तु कोई कर्म करने के लिए उसमें भोगवाद भी विद्यमान है। तो वह जो मेरा देव जिसकी व्यवस्था में बेटा! यह सँसार कटिबद्ध हो रहा है इतना महान् है कि उसकी महानूता प्रत्येक प्राणीमात्र और लोक-लोकान्तरों में निहित है। क्योंकि जितने भी प्राणी इस सँसार में वास कर रहे हैं चाहे वह पृथ्वी मण्डल में हों, चाहे मङ्गल में हों, किसी भी मण्डल में जो भी प्राणी रहता है, यह सब उस परमपिता परमात्मा की व्यवस्था है, उसी का नियन्त्रण है और उसी के गर्भ में यह सँसार क्रीड़ा कर रहा है। जिस प्रकार माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशु उस परमात्मा की आभा को लेकर क्रीड़ाशील रहते हैं इसी प्रकार यह जो ब्रह्माण्ड है यह उस परमपिता परमात्मा का गर्भाशय माना गया है। उसी के गर्भस्थल में यह सर्वत्र सँसार, प्राणीमात्र इसमें क्रीड़ा कर रहा है।

परमाणु और जगत्

इस सँसार में, जो इस गर्भस्थल में जैसे विचारने लगता है, वही बन जाता है। यह बेटा! त्यागमयी बनना चाहते हो तो त्याग

और तपस्या में तुम परणित हो जाओ। यहाँ दार्शनिक बनना चाहते हो तो दर्शनों की आभा में रमण करने लगो। मेरे प्यारे! एक ऐसा भव्य गर्भाशय है जिसके ऊपर चिन्तन करने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड उसमें आभायित होता हुआ दृष्टिपात होता रहता है परन्तु और भी गम्भीर चिन्तन करने से ऐसा प्रतीत होता है कि इस अन्तरिक्ष में बेटा! परमाणुवाद भरण हो रहा है। प्रत्येक प्राणी श्वास के द्वारा इन परमाणुओं का आवागमन हो रहा है। आवागमन कर रहे हैं, परमाणु आवागमन में ही गति कर रहा है। ब्रह्माण्ड में, आभा में गति करने वाला जगत् है।

महर्षि सोमकेतु महाराज का गान

बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है, एक समय महर्षि सोमकेतु महाराज अपने आसन पर विद्यमान हो करके अपने अन्तःकरण में जो चतुष्पाद वाला है, उस अन्तःकरण में जो भी आभा गति कर रही थी उस आभा को वह दृष्टिपात कर रहे थे। योग के द्वारा, मेरे प्यारे आत्मा में लीन हो करके और वह जो चतुष् वस्तुओं का अन्तःकरण है, जिसे हम मन और बुद्धि कहते हैं, चित्त और अहङ्कार जो इस चतुष् आभा के गर्भ में परमाणु गति कर रहा है, ये मेरे प्यारे! एक अन्तःकरणीय कहलाता है और वह अन्तःकरणीय जो परमाणु है इसका समन्वय, इस बाह्य जगत् से हो रहा है, बाह्य जगत् और आन्तरिक जगत् दोनों का समन्वय करता हुआ वह गान गा रहा है। वह गान गा रहा है और वह उद्गान गा रहा है, कैसा गान गा रहा है? वह ऊर्ध्वा को गति कर रहा है, ऊर्ध्वा में रमण कर रहा है। तो विचार-विनिमय क्या? जैसे बेटा! यज्ञशाला में यजमान विद्यमान हो करके यजन कर रहा है और यजन करके अपने शब्दों को वह स्वाहा कह करके अन्तरिक्ष में उसका समन्वय कर रहा है, उन तरङ्गों को अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत करा रहा है। उस साकल्य के सहित उसकी आभा अन्तरिक्ष में रमण कर रही

है। मैं सोमकेतु की चर्चा कर रहा था। **महर्षि सोमकेतु क्योंकि ज्ञान और विज्ञान दोनों में पारायण थे। पारायण इसलिए उच्चारण कर सकते हैं क्योंकि जितना वह जानते थे उनके समकालीन अन्य बहुत सूक्ष्म जानते थे।** परन्तु वास्तव में यह पारायणता का जहाँ प्रसंग आता है वहाँ बेटा! हमें तो ऐसा प्रतीत होता है कि सँसार में, इस प्रभु के राष्ट्र में, प्रभु के गर्भाशय में कोई भी मानव पूर्ण नहीं है क्योंकि कोई भी मानव पारायण नहीं है। **पारायण उसे कहते हैं जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड की आभा को जानने वाला हो।** तो कोई भी मानव इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड की आभा को नहीं जानता।

मैंने तुम्हें बहुत पुरातनकाल में निर्णय देते हुए कहा था कि एक-एक निहारिका ऐसी है इस ब्रह्माण्ड में कि चार अरब, तैतीस करोड़ वर्षों के पश्चात् बेटा! इस पृथ्वी मण्डल पर उसका प्रकाश नहीं आता तो बेटा! यहाँ पारायण उच्चारण करना, मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इन शब्दों को उच्चारण ही नहीं करना चाहिए, क्योंकि कोई भी मानव यहाँ सँसार में पारायण नहीं है।

महर्षि सोमकेतु के समीप जिस काल में बेटा! हम जाते थे उनसे वार्ता प्रकट करते थे तो सोमकेतु से यह उच्चारण करते थे कि महाराज आप तो विद्या में पारायण हैं तो सोमकेतु स्वतः यह उच्चारण करते थे कि मैं कैसे पारायण हूँ? यहाँ सँसार में तो प्रभु ही पारायण हो सकता है जो कि विज्ञानमयी स्वरूप है। जिसका यह जगत् विज्ञान में दृष्टिपात आ रहा है परन्तु उस प्रभु के राष्ट्र में नाना प्रकार की विद्याएँ हैं, नाना प्रकार का ज्ञान और विज्ञान है परन्तु जितनी मानव की आवश्यकता है उतना वह इस सँसार रूपी समुद्र में से प्राप्त कर लेता है और यहाँ नाना प्रकार की धाराओं में नाना विद्याएँ रमण कर रही हैं।

महर्षि सोमकेतु महाराज का विज्ञान

मेरे प्यारे! सोमकेतु कहते थे कि इस सँसार की आभा को हम और गम्भीरता से रमण करते हैं, निहारिकाओं में जाते हैं तो एक निहारिका को जानते हैं, दूसरी निहारिका उपस्थित हो जाती है। तो हमारे यहाँ बेटा! अब तक जब से सृष्टि प्रारम्भ हुई है, ऐसा उच्चारण किया जाता है कि लगभग **इस प्रभु की सृष्टि में जितने वैज्ञानिक हुए उनमें से (ये) ऐसे ऋषि हुए हैं, जो सात सौ निहारिकाओं तक पहुँचे।** सात सौ निहारिकाओं अथवा यह उच्चारण करिए कि सात सौ आकाश गङ्गाओं को जान पाए। परन्तु देखो, और सोमकेतु क्योंकि सात सौ आकाश गङ्गाओं में पहुँच गए थे, उनकी श्रुति पहुँची, उनका विज्ञान चला गया परन्तु उसके पश्चात् भी सोमकेतु कहते हैं कि अनन्त निहारिकाएँ हैं।

महर्षि सोमकेतु मुनि महाराज का जो कर्म था, प्रातःकालीन वह याग करते थे। याग के पश्चात् उसमें जो तरङ्गें उद्बुद्ध होती थीं उन तरङ्गों को जानते रहते थे, उन तरङ्गों में वह रमण करते रहते, अपनी गति, अपनी श्रुति पहुँचाते और उसके पश्चात् उनको जान करके उसके ऊपर वह यन्त्रों का निर्माण करते थे। उसके पश्चात् यन्त्रों में जो निहारिकाओं के दर्शन होते थे, उनमें लोक-लोकान्तरों के भी दिग्दर्शन करना, नाना सूर्यों को दृष्टिपात करना। मेरे प्यारे! एक ऐसे ऋषि सोमकेतु हुए जो इस महानता तक पहुँचे। परन्तु सोमकेतु ऋषि महाराज एक आकाश गङ्गा में वह 95 खरब, 89 अरब, 49 हजार, 52 सूर्यों की गणना कर चुके थे। उससे ऊर्ध्वा में कोई वैज्ञानिक नहीं पहुँचा। जहाँ तक बेटा! मुझे स्मरण है इस सँसार का बहुत-सा जगत् और सँसार। परन्तु ऐसा कोई ऋषि नहीं हुआ जो इतना विज्ञानमयी पहुँच गया हो परन्तु उन्होंने सात सौ ऐसी आकाश गङ्गाओं का भी दर्शन किया और उन आकाश गङ्गाओं में बेटा! 95 खरबों तक आकाश

गङ्गाओं को इससे विशेष आकाश गङ्गाओं को अप्रतम् मानो सूर्य गणित कर चुके थे।

मृत्यु और जीवन

मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या? आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रकट करने नहीं आया हूँ। आज क्योंकि मेरे प्यारे! महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे। वह याग के सम्बन्ध में अपनी विवेचना देते रहते हैं। मुझे भी स्मरण है कि **मानव को याग करना चाहिए** क्योंकि यागों में रमण करने वाला प्राणी मृत्यु को प्राप्त नहीं होता। जो सँसार में याग कर्म करता है उसकी मृत्यु नहीं होती। मृत्यु कहते हैं ह्रासता को। मृत्यु किसे कहते हैं? मृत्यु, शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु नहीं है। मृत्यु कहा जाता है जो निराश होकर जीवन व्यतीत करता है वह मृत्यु में सदैव रमण करता रहता है और जो अपनी जीवन को रहस्मयी जानकर के इसका उपभोग करता रहता है सँसार का और याज्ञिक होता है बेटा! उसकी मृत्यु नहीं होती। वह मृत्यु से पार होता है क्योंकि **शरीर को त्यागने का नाम हमारे ऋषि-मुनियों ने मृत्यु नहीं माना है।** क्योंकि ये शरीर जिसका निर्माण हुआ है, जिसका समन्वय हुआ है, उसका विच्छेद भी अनिवार्य है। क्योंकि जिस वस्तु का मिलान होता है, जिन परमाणुओं का मिलान होता है, उनका विच्छेद भी अवश्य होना है। इसको ऋषिजन मृत्यु नहीं कहते। मृत्यु किसे कहते हैं? मृत्यु कहते हैं? जो सँसार में अपने जीवन को व्यतीत कर रहा है और अपने को निर्बल स्वीकार करता है कि मेरे में कोई रहस्य नहीं है। वह अपने में अपनेपन को समाप्त किए हुए है। उदण्डता से रहने वाला मानव सदैव मृत्यु के मार्ग में रमण करता रहता है। अब जो मानव प्रातःकालीन अपनी क्रियाओं से निवृत्त रहता है और अपने क्रियात्मक कर्म में सँलग्न रहता है, मेरे प्यारे! याज्ञिक बना हुआ है अपने शब्दों को स्वाहा उच्चारण करके अन्तरिक्ष में गति करने वाला है। द्यौ-लोक में अपने शब्दों को

पहुँचाने वाला है। वह बेटा! अपने जीवन में रस को प्राप्त करता हुआ अमृत के आँगन में जा रहा है और जो अमृत को पान करता है उसकी मृत्यु नहीं होती।

आओ मेरे प्यारे! आज मैं कोई विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ। विचार-विनिमय केवल यह कि हम परमपिता-परमात्मा की आभा में रमण करते रहें क्योंकि यह सँसार, जितने भी ये लोक-लोकान्तर आज तुम्हें वर्णित कराये हैं यह उस परमपिता परमात्मा के गर्भस्थल में विद्यमान हैं और उसी के गर्भ में अपना क्रीड़ा कर रहा है, आँगन में रमण कर रहा है। अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव अभी-अभी कुछ विज्ञान की चर्चाएँ कर रहे थे। विज्ञानमयी आभा को प्रकट कराते हुए बहुत सा समय व्यतीत हो गया। मैं अपने पूज्यपाद-गुरुदेव से यह कहा करता हूँ कि जिस काल की मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव चर्चा करते हैं, हम सदैव अपने पूज्यपाद-गुरुदेव के विपरीत चर्चाएँ करते रहे हैं परन्तु ये सांत्वना की चर्चाएँ करते रहते हैं और हम क्रांतिमयी चर्चाएँ करते रहते हैं। मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव ने कई कालों में यागों की चर्चाएँ कीं। आज जहाँ हमारी आकाशवाणी जा रही है वहाँ भी मैं यागों का चयन कर रहा था परन्तु जहाँ तक कर्मकाण्ड का सम्बन्ध है, कर्मकाण्ड के ऊपर, यागों के ऊपर बहुत सी आपत्ति चलती रही है। यागों के कर्मकाण्ड कई प्रकार के होते रहे हैं। **मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव ने यागों के उन्नीस प्रकार के कर्मकाण्डों की विवेचना की।** अश्वमेध याग का कर्मकाण्ड भिन्न है, गो-मेध याग का कर्मकाण्ड भिन्न और पुत्रेष्टि याग का कर्मकाण्ड भिन्न है। ऋषि-मुनि

परम्परागतों से ही जहाँ वे विज्ञान के ऊपर चर्चाएँ करते रहे हैं वहाँ वे यागों के कर्मकाण्डों में भी सँलग्न रहे हैं। मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव नाना यागों के ऊपर अन्वेषण करते रहे हैं। महर्षि वशिष्ठ इत्यादि मुनि भी नाना प्रकार के यागो का चयन करते रहे हैं।

याग से फल प्राप्ति

यागों फलस्वरूप प्रत्येक मानव फल की इच्छा करता रहता है और यह चाहता रहता है कि मैं यागकर्म करने जा रहा हूँ, उसका फल मुझे प्राप्त हो। परन्तु फल कैसे प्राप्त होगा? जब होगा, जब कि मानव के द्वारा उस कर्म की निष्ठा होगी, हृदय से उस कर्म के उद्‌गार पवित्र बन जायेंगे और जब तक उद्‌गार पवित्र नहीं बन पाएँगे तब तक यागों के फलों की प्राप्ति नहीं होगी। परन्तु मैं इस विषय को उच्चारण नहीं करने जाऊँगा।

गृह में याग की प्रेरणा

केवल यह याग जो आज हो रहा था मैं वहाँ के कर्मकाण्डों की चर्चा तो नहीं कर पाऊँगा परन्तु यजमान को मैं सदैव अपनी मनोकामना प्रकट करता रहता हूँ क्योंकि मानव के हृदय के जो उद्‌गार होते हैं, हृदय शरीर रूपी यज्ञशाला में जो पवित्र विचारों का याग होता है उस पवित्र याग को सुविचार रूपी सुगन्धि यजमान के हृदय में प्रवेश हो जानी चाहिए क्योंकि हृदय जभी पवित्र बनते हैं। आज भी मैं यह कहा करता हूँ कि हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तेरे जीवन में सदैव महानूता बनी रहे और तेरे द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे और देवताओं का आह्वान करके, देवताओं का पूजन गृह में हो। प्रत्येक स्थली पर रहना चाहिए, प्रत्येक आभा से रहना चाहिए जिससे गृह में सुगन्ध आती रहे, परन्तु जिस गृह में याग होता रहता है वहाँ दुर्गन्धि भी होती रही है परन्तु कोई वाक्य नहीं, ये तो

समय-समय की आभाएँ सदैव मानव के जीवन को बाध्य करती रहती हैं, आज मैं इस आभा में जाना नहीं चाहता हूँ। मेरा केवल एक ही विचार है कि हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे।

आधुनिक काल का विज्ञान

आज मैं अपने पूज्यपाद-गुरुदेव को यह चर्चा करना चाहता था– आधुनिक काल का विज्ञान और मेरे पूज्यपाद गुरुदेव परम्परा के विज्ञान की चर्चा करते रहे हैं परन्तु आधुनिक काल के जब मैं विज्ञान में जाता हूँ तो आज के विज्ञान में कुछ निहारिकाओं के ऊपर विचार-विनिमय किया है परन्तु **कुछ वैज्ञानिक इस कार्य में लगे हुए हैं कि इस सँसार को जीवन नहीं मिलेगा।** इस सँसार के प्राणी को मृत्यु के मुखारबिन्दु में ले जाने के लिए तत्पर हो रहे हैं। नाना प्रकार का परमाणुवाद, अणुवाद इस प्रकार की आभा में क्योंकि आग्नेय यन्त्रों में इतना पारायण होने जा रहा है कि अपने में वह इसे स्वीकार कर रहा है, अपने में ही आभायित हो रहा है कि मैं विज्ञान के द्वारा, राष्ट्र के राष्ट्रों को भस्म करना चाहता हूँ परन्तु मैं यह कहा करता हूँ पूज्यपाद-गुरुदेव से, हे पूज्यपाद! कुछ काल व्यतीत हुआ है, इस पृथ्वी के **वर्तमान वैज्ञानिकों की एक सभा में निर्णय हुआ** कि यह जो वायुमण्डल अशुद्ध होने जा रहा है, परमाणुवाद विकृत हो गया है इसका आगे आने वाले समाज में परिणाम क्या होगा? तो एक वैज्ञानिक ने कहा कि कुछ वर्ष बाद ऐसा समय आएगा कि मानव को श्वास लेने की कठिनाई होगी और मृत्यु तक आ सकती है। तो उस समय वैज्ञानिकों को क्या करना चाहिए? तो हमारे आधुनिक काल का जो विज्ञान है इसमें यह सूक्ष्मता है कि वह वेद का अध्ययन नहीं करता क्योंकि वेद की विद्या प्रकाश की है परन्तु जहाँ वह वेद का प्रसार करने लगें, उसका अध्ययन करने लगें तो वेदों की, वेदमन्त्रों में, वेद की विद्या में उन्हें कहीं याग का प्रकरण प्रतीत होगा और याग का प्रकरण जब प्रतीत होगा तो वह

जो याग भी करेंगे, परमाणु विद्या को भी जानेगें तो कभी उनके समीप यह वार्ता आ ही नहीं पाएगी जब प्राणी-प्राणी नष्ट हो जाऐं। नष्ट क्यों हो जाएँ? क्योंकि इस विद्या में सूक्ष्मता रह गई है, क्योंकि विज्ञान सदैव इस मानवीयता में आभायित हो रहा है।

कर्त्तव्य पालन और प्रतिभा का अभाव

मैंने जब बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद-गुरुदेव को प्रकट कराया था परन्तु आज भी मैं उसी प्रकरण को ले करके अपने कुछ वाक् प्रकट करना चाहता हूँ क्योंकि हमारे यहाँ इस पृथ्वी मण्डल में जितने भी राष्ट्रवेत्ता हैं उनमें कर्त्तव्य का पालन नहीं रहा है। मैं यह उच्चारण कर सकता हूँ कि उनमें कर्त्तव्य का पालन नहीं रहा है और जब मैं उस राजा और राष्ट्र के विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ तो वहाँ के विद्यार्थी समाज और विद्यालयों में जो गुरु हैं वह कर्त्तव्यशील नहीं है। विद्यालयों में आचार्य इतना पवित्र हो कि वह ब्रह्मचारी के मस्तिष्क का अध्ययन करने वाला हो। मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव मुझे यह कहा करते थे कई कालों में, ब्रह्मचारी का मस्तिष्क का अध्ययन करने से ही उसके आचरणों की प्रतीति उसे हो जाती है। परन्तु इतनी विद्या होनी चाहिए। उस विद्या में जब आचार्य अपने ब्रह्मचारियों को, अपनी इन्द्रियों का ज्ञान नहीं करा सकता तो विद्यालय क्या रह गए हैं। मैं जब विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ तो ब्रह्मचारियों से यह प्रश्न किया जाए कि तुम्हारे शरीर में कितनी इन्द्रियाँ प्रभु ने निर्मित की हैं? तो आचार्य उससे विमुख है और ब्रह्मचारी भी उससे दूर हो जाता है। परन्तु यह क्या है प्रतिभा, अप्रतिभा? प्रतिभा इसे कहते हैं परन्तु मैं उसे अप्रतिभा कहा करता हूँ क्योंकि सँसार में आज प्रत्येक मानव जब द्रव्य के ऊपर अपने जीवन को निर्धारित कर देता है तो वहाँ कर्त्तव्य का पालन नहीं होता। यह समाज की आभा की, यह मानव की सत्यता है। जो मानव, जो राष्ट्र द्रव्य के ऊपर अपने जीवन को निर्धारित कर लेता है उस समाज में

या उस राजा के राष्ट्र में या विद्यालयों में कर्त्तव्य का पालन नहीं होता और जहाँ कर्त्तव्य का पालन नहीं होता वहाँ मानवता की चर्चा करना एक अपवाद बन जाता है। इसलिए मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद-गुरुदेव से कई बार प्रकट कराया।

आज जब मैं विद्यालयों में प्रवेश करता हूँ, वहाँ विज्ञान में रमण करने लगता हूँ तो परमाणु अग्नि शस्त्रो के तो अस्त्र-शस्त्र निर्माणित हो गये हैं। अरे भोले वैज्ञानिकों! जब मानव के जीवन लेने वाले अस्त्रो-शस्त्रो के निर्माण होंगे तो यहाँ उस समय तुम्हारा यह विज्ञान सफलता के मार्ग को कैसे प्राप्त कर सकता है? परन्तु अभी तो मानव केवल इसी में लगा हुआ है कि इस राष्ट्र का, दूसरे राष्ट्र पर, मेरा प्रभुत्व कैसे हो? परन्तु आजका मानव आज का राष्ट्र, आज इस राष्ट्र में वैज्ञानिक इस आभा पर लगा हुआ है कि मैं एक-दूसरे राष्ट्र में, राष्ट्र के ऊपर मेरा प्रभुत्व कैसे हो जाए? उसे प्रभुत्व की इच्छा है, कर्त्तव्य पालन की कोई इच्छा समाज को नहीं। परन्तु जब मैं यह दृष्टिपात करता हूँ, गृहों में प्रवेश करने लगता हूँ, विद्यालयों में जाता हूँ वैज्ञानिकों की सभाओं में अर्पित होता हूँ तो वहाँ मुझे ऐसा ही प्रतीत होता है कि यह समाज कहाँ चला गया है? राष्ट्रवाद कहाँ चला गया है? जहाँ राष्ट्रवाद अपने ही आँगन में, गृह के आँगन में अपने अन्न की पूर्ति करता था, वहाँ से मुक्त करके उसे अपने उदर की पूर्ति होती थी, आजका राष्ट्र समाज के वैभव को एकत्रित करके अपने उदर की पूर्ति कर रहा है। परन्तु यह रजोगुण, तमोगुण का सना हुआ जो राजा के द्वारा अन्न जाता है उसे राष्ट्र ग्रहण करता है तो राजा कर्त्तव्य का पालन नहीं करता। किसी भी काल में नहीं कर सकता।

पुरातनकाल और वर्तमान काल के ऋषि-मुनि

मुझे स्मरण है एक समय मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव ने कहा कि चलो, आज हम अश्वपति के राष्ट्र में गमन करते हैं। तो मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव

और हम कुछ और महापुरुष थे। परन्तु राजा ने जब अन्न इत्यादि के लिए उच्चारण किया तो ऋषियों ने कहा कि राजन्! हम तुम्हारा अन्न ग्रहण नहीं करेंगे क्योंकि तुम्हारा अन्न राजा-महाराजाओं का जो अन्न है वह रजोगुण और तमोगुण से सना हुआ होता है। परन्तु राजा ने नतमस्तक हो करके, चरणों में ओत-प्रोत हो करके कहा कि प्रभु मेरा अन्न आप योगाभ्यास से, योग से मेरे अन्न को दृष्टिपात करके आप पान कीजिए, मेरा अन्न दूषित नहीं है। मेरे प्यारे! जब मैं आज के ऋषि-मुनियों के समाज को दृष्टिपात करता हूँ, यदि राजा भोजन के लिए उच्चारण कर देता है तो महात्मा अपने जीवन को धन्य स्वीकार करने लगता है। परन्तु कहाँ ऋषिजन ऐसे थे कि राजा के द्वारा स्पष्ट उच्चारण करते थे। कहाँ वह आधुनिक काल का विशेषकर जहाँ हमारी आकाशवाणी जा रही है, इस राष्ट्र का साधु समाज स्वीकार करता है कि मेरे द्वारा तो अधिराज आते हैं, मैं बड़ा सौभाग्यशाली हूँ वह बलवती बन जाता है। आज जब मैं इन वाक्यों पर जाता हूँ तो मैं यह कहा करता हूँ कि यह ब्रह्म विद्या का अपमान है। यह ब्रह्म विद्या के ऊपर नाना प्रकार की त्रुटियाँ हैं। इसको हमें स्वीकार नहीं करना चाहिए। मैं आज इन वाक्यों में जाना नहीं चाहता।

ज्ञान-विज्ञान का स्रोत

विचार-विनिमय केवल हमारा यह कि आज जब मैं विज्ञान के ऊपर टिप्पणियाँ करने के लिए तत्पर होता हूँ तो मुझे स्मरण आने लगता है कि आधुनिक काल का जो विज्ञान है वह अपने में बहुत ऊर्ध्वा में स्वीकार करता है। परन्तु जब भौतिक विज्ञान, आध्यात्मिक विज्ञान दोनों के ऊपर विचार-विनिमय होता है। मैं याग के ऊपर टिप्पणियाँ करता रहता हूँ, आधुनिक काल का समाज यह कहता है कि वेद की जो विद्या है, वेद का जो मन्त्र है वह केवल कर्मकाण्ड तक सीमित है। केवल पूजा तक सीमित है परन्तु मैं यह उच्चारण

करता रहता हूँ कि एक-एक वेदमन्त्र के ऊपर जब चिन्तन करना प्रारम्भ करोगे तो इसमें बह्माण्ड समाहित होता दृष्टिपात आएगा। परन्तु तुम्हारे द्वारा बुद्धि ही नहीं है, रहा यह कि दूसरी वेद के विपरीत जो वाणियाँ हैं, भाषा अन्तर है, उसी में विज्ञान को जाना है। अरे वैज्ञानिको! उन्होंने नहीं जाना है, विज्ञान वेद सर्वमयी विज्ञान उसके गर्भ में निहित रहता है क्योंकि वेद नाम चारों पोथियों को नहीं कहते। **वेद नाम ज्ञान का है, प्रकाश का है। अन्तःकरण को शुद्ध बनाने वाला विज्ञान कहलाता है, वह प्रकाश कहलाता है।** पूज्यपाद कहा करते हैं जैसे बाह्य जगत् में सूर्य प्रकाश देता है और सूर्य के प्रकाश से मानव प्रकाशित हो जाता है। ऐसे वेद रूपी जो सूर्य हैं वह मानव के अन्तःकरण को प्रकाशित करता रहता है। अन्तःकरण उसी से प्रकाशित होता है और उस प्रकाश में जा करके नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञान में रमण करता रहता है। ये नाना निहारिकाएँ कहाँ से प्राप्त होती हैं? यह हमें वेद-ज्ञान से प्राप्त होती हैं, पूजा का अर्थ क्या है, पूजा किसे कहते हैं? पूजा कहते हैं उपभोग को, जिस वस्तु की हम पूजा करना चाहते हैं, उसका उपयोग विशुद्ध रूप से करना ही उसकी पूजा कहलाती है। जैसे अग्नि है, अग्नि की हम पूजा करते हैं, यागों के द्वारा पूजा करते हैं, अग्न्याधान करते हैं, मन्त्र उच्चारण करते हैं। मन्त्र कहता है यह द्यौ-लोकिक अग्नि है द्यौ-लोक से इसका समन्वय रहता है। जब नाना प्रकार के द्यौ-लोकों से इसका समन्वय रहता है तो यह अग्नि हमारे जीवन का रक्षक है, अग्नि हमें प्रकाश में ले जाने वाली है। तो प्रत्येक वेद के मन्त्र को जब अनुसन्धानीय दृष्टि से दृष्टिपात करोगे तो नाना वैज्ञानिकों के रूपों को तुम धारण कर सकते हो।

वैदिक साहित्य का रहस्य

मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव यह प्रकट करेंगे कि यह पुत्र क्या उच्चारण करने लगा है। परन्तु मैं यह कहा करता हूँ कि आधुनिक समाज आहार

के ऊपर कितना अपने में अकृत स्वीकार कर रहा है। आज मैं पुरातन काल के यागों की चर्चा और मध्यकालीन चर्चाएँ कर रहा था, परन्तु एक काल याग के ऊपर ऐसा हुआ कि अश्वमेध याग में अश्व के अङ्गों की आहुति दी जाने लगी। जहाँ गो-मेध याग का प्रकरण आया तो वहाँ गो नाम के पशुओं को आहुति में परणित करने लगे। जहाँ अजयमेध याग का प्रश्न आया वहाँ अजय की आहुति देनी प्रारम्भ की परन्तु विशुद्ध काल आया महापुरुषों का। प्रभु की प्रतिभा में महापुरुष आते रहते हैं किन्तु इसके पश्चात् अजय-मेध, गो-मेध, नर-मेध नाना प्रकार के यागों का चयन हमारे यहाँ होता रहा है। गो नाम पशु का भी है, परन्तु जब वैदिक साहित्य में पहुँचे तो गो नाम के बहुत से पर्यायवाची शब्द प्राप्त हुए। गो नाम यहाँ इन्द्रियों को स्वीकार किया गया है और इन्द्रियों के प्रत्येक अङ्गों की आहुति देना, हृदय रूपी यज्ञशाला में उनकी आहुति दी जाती है परन्तु जहाँ यह प्रदीप्त की हुई अग्नि, इसमें गो अङ्गों की आहुति देना वाममार्ग सम्प्रदाय चले और नाना प्रकार के सम्प्रदायों में यागों की प्रतिभा नष्ट हो गई। उसका परिणाम क्या हुआ कि अज्ञान आ गया, याग करने समाप्त कर दिए समाज ने, समाज में अन्धकार आ गया।

देखो! यहाँ अश्व नाम राजा का था। अश्व नाम यहाँ पशु का स्वीकार किया गया। यहाँ अजय नाम, यहाँ बकरी को स्वीकार किया। आज हम पृथ्वी को कहते थे परन्तु वैदिक साहित्य में नाना प्रकार की आभाएँ परणित होती रही हैं। मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव यदि मुझे समय देते रहे तो मैं इनकी व्याख्या कर सकूँगा। आज मुझे इतना समय आज्ञा नहीं दे रहा है कि मैं इसकी विवेचना करने लगूँ। मैं केवल सूक्ष्म-सूक्ष्म वाक् प्रकट करने जा रहा हूँ। विचार-विनिमय क्या? कि आज मैं नाना प्रकार के यागों में जहाँ नर मेध जो नर की आहुति देना परन्तु यहाँ नरमेध यहाँ नरमेध मृत्यु के पश्चात् ही किया जाता है। वहाँ आहुतियाँ

दी जाती हैं परन्तु वह अङ्गों को नष्ट करना नहीं है, यहाँ है समर्पित करना। समर्पित करने का अभिप्राय यह है कि हम जिस कार्य को करने जाएँ उसमें हम तन्मय हो जाएँ। वह कार्य जिसमें हमें सफलता प्राप्त होती चली जाए।

आधुनिक विज्ञान की देन

मैंने अपने पूज्यपाद-गुरुदेव से पुरातनकाल में भी यह वाक्य प्रकट किए थे कि आधुनिक काल का विज्ञान, मैं उस विज्ञान में जाना चाहता हूँ, मैं यागों की चर्चायें करने नहीं आया हूँ। केवल विचार यह कि मैं केवल विज्ञान में आधुनिक काल का विज्ञान मानव को निकृष्टता देता है, उनको त्रास देता रहता है। मैंने अभी-अभी पूज्यपाद-गुरुदेव से प्रकट कराया था कि कुछ काल हुआ एक सूर्य और चन्द्र, पृथ्वी के मध्य में चन्द्रमा की छाया, चन्द्र को सूर्य से छाया आ गई जिसको हम ग्रहण कहते हैं परन्तु उस ग्रहण के ऊपर आधुनिक काल के वैज्ञानिकों ने समाज को इतना त्रास दिया, इतना भयभीत में परणित कर दिया कि समाज 'अपने गृहों में परणित हो गया क्या इतना त्रास देना, आत्मबल को सूक्ष्म कर देना है। विज्ञान मानव को बल देने वाला है, विज्ञान मानव की आत्मा को बलिष्ठ बनाने वाला है। विज्ञान राष्ट्र के ऊपर अपनी आभा को प्रकट कराने वाला हैं मैंने यह बहुत पुरातन काल में पूज्यपाद-गुरुदेव को प्रकट कराया था। पुरातन काल का वैज्ञानिक इसके ऊपर इतनी त्रासता में नहीं आता। आज का मानव जब यह कहता है कि विज्ञान तन्तुओं से वायुमण्डल दुषित हो रहा है तो मैं अपने पूज्यपाद-गुरुदेव से यह प्रकट करता रहता हूँ कि यह विज्ञान क्या है? जब इसमें इतनी भयभीतता आती है, जब इतना त्रास आता है। अरे श्वास के ऊपर तुम क्यों चिन्ता करते हो। तुम्हें चिन्ता वह करनी है जहाँ तुम्हारा श्वास गतिशील बनता चला जाए, आत्म उन्नति होती चली जाए। यह समाज, यह राष्ट्र, यह विज्ञान इस विज्ञान

से मानव की रक्षा होने वाली नहीं है। मानव की रक्षा उस काल में होगी जब विज्ञान और आध्यात्मिकवाद दोनों का समन्वय करने वाले विवेकी पुरुष होंगे। वैज्ञानिक विवेकी हो और आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता भी विवेकी हों। दोनों की विचार-धाराएँ एक संग तुलना में परणित होती हुई ज्ञान और विज्ञान में रमण करते हुए आध्यात्मिकवाद में प्रभु के गर्भ में प्रवेश होने वाली आत्मा भी होनी चाहिएँ। जिससे तुम्हारा समाज, तुम्हारा राष्ट्रवाद वेद के मार्ग को प्राप्त करके समाज को उन्नत बनाता रहे। यहाँ नाना प्रकार की रूढ़ियाँ इस प्रकार की हुई हैं जिन रूढ़ियाँ में विद्या से विहीन होना और अपने राष्ट्र के ऊपर उनके वैभव को स्वीकार करना, उसे अपने में अपनेपन को उन्नत बनाने के लिए द्रव्य की आभा में यह समाज परणित होता गया है। परन्तु ऐसा नहीं होना था आज वर्तमान में भी हो रहा है कि प्रजा के वैभव को संग्रह करना और समाज को अज्ञानी बनाना, समाज को मूर्खता में त्रास देना और भयभीत का त्रास देकर के इस समाज को अज्ञानता के पथ पर परणित किया जा रहा है। परन्तु जब मैं इन वाक्यों में जाता हूँ, शिक्षालयों में जाओ तो इन्द्रियों का ज्ञान नहीं, विज्ञान में जाओ तो त्रास देने का प्रसँग आ रहा है। राष्ट्र में जाते हो तो वह प्रजा के वैभव को सँग्रह कर रहा है। क्या यह समाज बन गया है।

वशीकरण की प्रेरणा

मैं यह कहा करता हूँ कि समाज में मानवता होनी चाहिए मानवता कैसे आती है? मानवता उस काल में आती है जब वेद की तरँगों को अपनाना मानव प्रारम्भ करता है और उसकी आभा में रमण करने लगता है। केवल वेद की आभा इसे ही नहीं कहते कि हमने एक वेदमन्त्र को उच्चारण कर लिया है अथवा नहीं, कदापि नहीं। वेदमन्त्र के ऊपर अध्ययन करना और उसके अनुसार अपनी इन्द्रियों को अपने वशीभूत करने को उसे हमारे यहाँ वशीकरण कहा जाता है।

आज हम अपनी-अपनी आभाओं में परणित हो रहे हैं। मैं अपने पूज्यपाद-गुरुदेव से अब आज्ञा पाने वाला हूँ क्योंकि मैं यह उच्चारण करने के लिए पूज्यपाद-गुरुदेव को निर्णय कराने के लिए आया हूँ कि आधुनिक समाज किस प्रकार का बन रहा है।

पुनीत आत्मा के लिए प्रभु से याचना

हे मेरे देव! वह काल प्रभु की आभा में किस काल में आएगा जब यहाँ महापुरुष उत्पन्न हो करके, भगवान् मनु जैसे राजा आकर के, भगवान् राम जैसे आ करके, राष्ट्र को विशुद्ध बना सकेंगे। मैं यह प्रार्थना करता रहता हूँ। मैं सदैव प्रभु से भी याचना करता रहता हूँ, हे प्रभु! समय-समय पर आत्मा तेरे राष्ट्र में आती रहती हैं, राष्ट्र को उन्नत बनाती रहती हैं। हे प्रभु! आप कोई पुनीत आत्मा इस सँसार में परणित कीजिए जिससे यह आपका पृथ्वी का राष्ट्र विशुद्ध बनता चला जाए। आजका वाक् अब मैं समाप्त करने जा रहा हूँ।

मैं अपने पूज्यपाद-गुरुदेव से आज्ञा पा रहा हूँ। क्योंकि **मैं यह उच्चारण करने आया था** कि हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तेरे गृह में सदैव सुगन्धि आती रहे और यागों का चयन होता रहे, द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। यही देवताओं की पूजा है, जिससे द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। यही देवताओं की पूजा है, जिससे द्रव्य का सदुपयोग होकर के धर्म के मर्म की वार्ता को जानने लगता है। अब मैं पूज्यपाद-गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर, मेरे प्यारे महानन्द जी अपनी करुणामयी वार्ता सदैव प्रकट करते रहते हैं परन्तु उनके हृदय के जो उद्गार हैं वे एक महानता में परणित होते रहते हैं। हम सदैव अपने देव से प्रेमायुक्त

हो करके वाक् प्रकट करते रहते हैं कि हे देव! इस सँसार को करुणामयी बनाइये। यह करुणामयी बन करके ज्ञान और विज्ञान दोनों का समन्वय होता हुआ यह समाज अपनी-अपनी आभा में परणित होता रहे और **वेद की आभा, वेद की जो पवित्र विद्या है उसको प्रकाशमयी स्वीकार करते हुए अपनी हृदय रूपी जो स्थली है, यज्ञवेदी है उसे पवित्र बनाना हमारा कर्त्तव्य बन जाता है।** मेरे प्यारे महानन्द जी ने अभी-अभी कुछ यागों के चयन की चर्चाएँ कीं। यागों का चलन, यागों की आभाओं में परणित होता रहता है। अश्वमेध, गो-मेध यागों का वर्णन मेरे पुत्र ने अभी-अभी प्रकट किया। समय मिलता रहेगा, इन यागों के कर्मकाण्डों की चर्चाएँ भी करते रहेंगे। पुरातन काल में, जीवन की इन आभाओं में याग सदैव रमण करता रहा है। यागों का चयन कर्मकाण्ड की आभाओं में रमण करता रहा है। गो-मेध, नर-मेध, अश्व-मेध नाना प्रकार के यागों का चयन परम्परागतों से हमारे और ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों में नृत्य करता रहा है। क्योंकि याग में हिंसा नहीं होती। **याग मानव का, मोक्ष के द्वार का एक प्रथम द्वार माना गया है,** तो जहाँ प्रभु से मिलन हो वहाँ हिंसा कैसी, वहाँ हिंसा नहीं होती। इसलिए याग में हिंसा होना यह उचित नहीं है। यदि मेरे पुत्र ने जैसे कहा मध्यकाल के कुछ वाममार्ग वालों ने ऐसा किया है तो उन्होंने इस वेद के वाक्यों को जाना नहीं, इसके ऊपर अनुसन्धान नहीं किया। अनुसन्धान करना चाहिए, विज्ञान और आत्मिक विज्ञान दोनों का समन्वय होना बहुत अनिवार्य है क्योंकि विज्ञान का सदुपयोग उसी काल में हो सकता है जब कि दोनों का समन्वय हो। इसलिए जो भौतिकवाद है, भौतिक विज्ञान है, परमाणुवाद है, इस परमाणुवाद की सत्ता आध्यात्मिक विज्ञान के साथ रहती है। यदि इसके साथ परमाणु विज्ञान है, अग्नि विज्ञान है, आत्मीय विज्ञान इसके साथ नहीं है तो यह विज्ञान अपङ्ग बन करके यह राष्ट्रों का घातक बन जाता है।

आजका यह विचार अब हमारा समाप्त होने जा रहा है, याग कर्म महान् है, इसमें हिंसा नहीं है, हिंसा से रहित कर्म है। यह परम्परागतों से ही, अरबों वर्षों से ही, सृष्टि के प्रारम्भ से ही यह कर्म महापुरुषों के मस्तिष्कों में नृत्य करता रहा है और क्रिया में आता रहा है। **आदि ब्रह्मा इस याग को करते थे, ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा ने इस कर्मकाण्ड की रक्षा की।** उसके पश्चात् हरितत्व गोत्र हुआ, उससे और भी नाना गोत्रों ने इस याग को महान् माना है। उद्दालक गोत्र ने विज्ञान और कर्मकाण्ड दोनों का समन्वय किया।

आजका विचार अब यह समाप्त होने जा रहा है, समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ इन कर्मकाण्डों के सम्बन्ध में करते रहेंगे। आज मेरे पुत्र ने अपनी करुणामयी वार्ता प्रकट की है। उनके हृदय में सदैव समाज के उत्थान की चर्चाएँ और करुणामयी राष्ट्र सदैव शोक प्रकट करते रहते हैं। आजका वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

वेदपाठ. . . . . .

अच्छा भगवन्! आज्ञा

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दिनाँक : 20 नवम्बर, 1981

समय : दोपहर 2 बजे

स्थान : ग्राम बसेडा

॥ ओ३म् ॥

तीन समिधा

विचार क्या मुनिवरो! जब ब्रह्मवेत्ता के समीप पहुँचो तो तीन समिधा ल करके जाना चाहिए। समिधा का अभिप्राय क्या? मैनें बहुत पुरातन काल में कहा, तीन समिधा वह होती हैं जो आत्मा को चेताने के लिए अग्नि में उद्बुद्ध हो जाती हैं, जिन समिधाओं के द्वारा देव-पूजा होती है। वर्तमान के काल में जब हम गुरुओं के समीप पहुँचते थे तो तीन समिधा लेकर के जाते। यह विचार करके कि पूज्यपाद गुरुदेव कहीं याग कर रहे होंगे परन्तु याग में तीन समिधा होनी चाहिए। तीन प्रकार का कर्म होता है। मेरे प्यारे! ज्ञान, कर्म और उपासना–यही तो मानव का जीवन कहलाया जाता है जिससे ज्ञान, कर्म और उपासना में हम रत्त रहें। क्योंकि हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में वेद तीन शब्दों में वेद प्रतिपादित रहता है जिसे ज्ञान, कर्म और उपासना के रूप में हम स्वीकार करते हैं। वही तो वेद की प्रतिभा, वेद की मीमांसा और वेद के स्वरूपों में रत्त रहते हैं। तो विचार आता है जब महाराजा ज्ञानश्रुति के लिए गाड़ीवान रेवक ने यह वाक्य कहा कि ज्ञानंब्रह्मेः, वास्तव में तीन समिधा ले करके आचार्य के समीप जाना चाहिए। अभिमान के रूप में तीन ही उपाधियाँ होती हैं। सतोगुण में भी अभिमान होता है, रजोगुण, तमोगुण में तो अभिमान की प्रबलता हेाती ही है। तो यह ज्ञान, कर्म ओर उपासना यही तो मानव को ऊँचा बनाती हैं, यही तो मानव को अग्रणीय बनाते हैं। 'ज्ञानाम् ब्रह्मे कृतः' वेद का आचार्य कहता है, हे मानव! तू अपने को तीन समिधा में ले करके ब्रह्मवेत्ताओं के समीप पहुँच, जिससे तेरा आत्म-कल्याण हो, जिससे तुझे आत्मा के प्रति आत्मा की प्रतिभाषिता होनी चाहिए।

पूज्यपाद-गुरुदेव

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. जीवन नाम है ज्ञान का, जीवन नाम है विवेक का, जीवन नाम है दूसरों के प्रिति करने का, और जीवन नाम है परमात्मा की गोद में जाने का।
2. मृत्यु वह है जो दूसरो को कष्ट देता है आज जो यह द्वेष है इसका नाम मृत्यु है यह जो काम, क्रोध, मद लोभ और मोह है इनमें जो फँस जाता है। उसका नाम मृत्यु है जो अभिमान में चला जाता है उसका नाम मृत्यु है।
3. अग्ने किसे कहते हैं? तेज को, ज्ञान विज्ञान को जिस मानव के हृदय में ज्ञान विज्ञान होता है मानवत्व होती है उसका जीवन अग्ने कहलाता है।
4. अहिल्या हमारे यहाँ पृथ्वी को कहते हैं अहिल्या रात्रि को भी कहते हैं अहिल्या माता को भी कहते हैं नाना प्रकार के अहिल्या के शब्दार्थ माने गए हैं।
5. हमें आत्मा के लिए भोजन करने का प्रयत्न करना चाहिए। आत्मा का भोजन क्या है? आत्म का भोजन है ज्ञान और विज्ञान और जितने भी शुभ कर्म हैं।
6. यह प्रभु यम कहलाता है यमराज उसी को कहते हैं, यमऽस्ति जो मानव के कर्मों का न्याय करता है।
7. नाभि में अमृत स्थान होता है, अमृत प्राप्त होता है मनुष्य ब्रह्मचर्य में सजा हुआ होता है।
8. ऋषिजन अपने जीवन का मन्थन करते हैं और मन्थन करते-करते परमात्मा को प्राप्त हो जाते हैं परन्तु परमात्मा के नियम के विरुद्ध कोई भी कार्य नहीं करते।
9. हमें परमात्मा के अनुकूल अपना जीवन बना लेना चाहिए परमात्मा की आज्ञा में विचरण करना चाहिए।

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन व नामकरण सँस्कार की शुभकामनाएँ

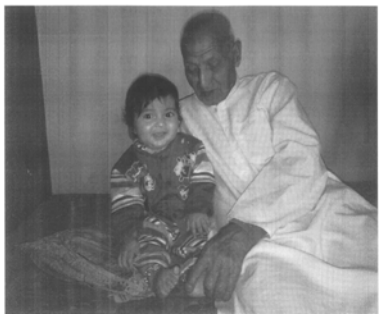

प्रिय अनुव्रत

परमपिता परमात्मा की अनुकम्प कृपा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के शुभार्शीवाद से श्रीमति प्रकाशवती धर्मपत्नी श्री कालूराम त्यागी जी निवासी ग्राम दिनकरपुर, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश ने 1 मई, 2016 को अपने पड़पौत्र आयुष्मान प्रिय अनुव्रत का प्रथम जन्मदिवस, नामकरण सँस्कार के उद्घोष के साथ वैदिक परम्परा का अनुकरण करते हुए यज्ञ भगवान् की छत्र-छाया में वेद मन्त्रों का गायन करते हुए सन्यासियों के सँरक्षण में बहुत ही आनन्द के साथ सम्पन्न कराया। जिससे कि वैदिक सम्पदा को पुनः से सभी अतिथियों को भी देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सभी उपस्थित समाज ने प्रिय अनुव्रत को बारम्बार शुभार्शीवाद करते हुए बाबा श्री गुरुवचन शास्त्री जी पिता श्री सूर्यदेव जी को भी परिवार सहित शुभकामनाएँ प्रदान की। यज्ञ के उपरान्त सभी ने प्रसाद ग्रहण करके परिवार का धन्यवाद किया।

याज्ञिक एवम् श्रद्धालु परिवार से इस पावन बेला के आगमन पर 2100 रु. का सात्विक सहयोग प्राप्त हुआ है जिसके लिए समिति हृदय से धन्यवाद करती है और प्रिय अनुव्रत को बारम्बार शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए परमपिता परमात्मा से समस्त परिवार की सुख, शान्ति, दीर्घायु एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

श्रीमति इन्दु भारद्वाज व श्री विपिन भारद्वाज निवासी ग्राम रई, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश ने अपने प्रिय सुपुत्र रक्षित भारद्वाज के अठारहवें जन्मदिवस, दिनाँक 7 जून, 2016 के शुभ आगमन पर प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 1101 रु. का सात्त्विक सहयोग समिति के प्रकाशन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए उदारता से प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार व्यक्त करती है।

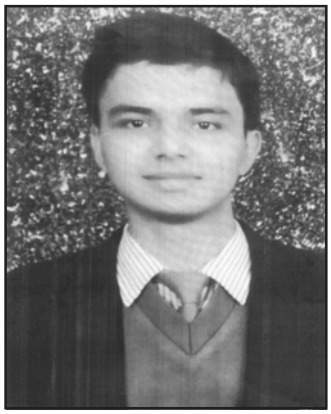

रक्षित भारद्वाज

श्री भारद्वाज जी गुड़गाँव में सेवारत हैं और वहीं पर अपने परिवार सहित अपने जीवन को अपने कार्य के साथ-साथ वैदिक परम्परा से सम्पन्न करने में प्रयत्नशील हैं। समस्त परिवार पूज्यपाद गुरुदेव से विशेष प्रभावित है और उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए यागों में अपनी आहुति प्रदान करके अपने जीवन को निरन्तर यज्ञमयी बनाने में सदैव अग्रणीय रहता है।

ऐसे श्रद्धालु एवम् याज्ञिक परिवार के सहयोग का समिति पुनः से आभार प्रकट करती है और उनके सौभाग्यशाली पुत्र के जन्मदिवस पर बारम्बार शुभकामनाएँ देते हुए समस्त परिवार के लिए सुख, शान्ति, दीर्घायु व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	60.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	40.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	35.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	35.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	30.00
32.	याग और तपस्या	60.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
35.	याग-चयन	40.00
36.	दिव्य-रामकथा	120.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
41.	आत्म-उत्थान	40.00
42.	तप का महत्व	40.00
43.	अध्यात्मवाद	40.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
45.	वैदिक-प्रभा	35.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	35.00
50.	आत्मा का भोजन	40.00
51.	साधना	35.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
57.	माता मदालसा	50.00
58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
65.	प्रभु-दर्शन	50.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
*69.	ब्रह्म की ओर	50.00
70.	ईश्वर मिलन	50.00
71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	80.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 01234–240395
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री विवेक त्यागी, 16ए, अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23282088
13. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
14. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
15. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
16. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है :-

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900

website : www.shringirishi.in

Email : contact@shringirishi.in

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस अन्तरात्मा को जानने का प्रयास करें। हम आत्मवेता बन करके अपनी मानवीय धारा में ऊँचा बन जाएँ। यह न सूर्य है न चन्द्रमा है न तारामण्डल है, न अग्नि है, न शब्द है। भगवन्! प्रकाश के देने वाला आत्मा है। आत्मा के कारण ही मानव का शरीर क्रियाशील बना रहता है। तो इसीलिए प्रत्येक मानव को आत्मा को जानना चाहिए आत्मवेत्ता बनने के लिए, आत्मचेतना में ही रत्त रहना चाहिए। क्योंकि जो हमारे शरीरों में भास रहा है, प्रकाशक बना हुआ है, उस प्रकाश को जानने के, प्रकाश से प्रकाशित होना चाहिए। यह कैसा अद्‌भुत जगत है, इसके ऊपर विचारना है बहुत गम्भीरता से मनन करना है। क्योंकि मनन करने वाला यह ब्रह्माण्ड है, प्रभु की जो रचना है वह बड़ी अद्‌भुत है। इसीलिए प्रभु का गुणगान गाना हमारे लिए अनिवार्य है।

पूज्यपाद-गुरुदेव